ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 12 | ISSUE - 1 | SEPTEMBER - 2025

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

हिंदी साहित्य में चित्रित किसान की समस्याओ का अनुशीलन

प्रा. निलेश रामहरी माने
सहा.अधिव्याख्याता ,
मारुतीराव हरीराव महाडिक कला व वाणिज्य महाविद्यालय, मोडनिंब.
ता. माढा, जि. सोलापूर.

प्रस्तावना:-

हमारा देश कृषिप्रधान देश है | यहा की लगभग ७० प्रतिशत आबादी कृषिकार्य पर निर्भर है| किसान खेती करके दुनिया के लिये भोजन हेतु अनाज,फल,सब्जिया आदि चीजो का उत्पादन करते है| यदि किसान खेती नही करेंगे तो अनाज का उत्पादन नही होगा और जब अनाज का उत्पादन नही होगा तो लोग भूख से मरेंगे| अत: मनुष्य को जीवित रहने के लिये अनाज की और अनाज का उत्पादन करने हेतु किसान का होन उतना ही महत्त्वपूर्ण है| हमारे यहा किसान को अन्नदाता,धरतीपुत्र एवं देश की रीड की हड्डी तक कहा जाता है|

शोध का उद्देश्य:-

आज आजादी के ७५ साल बाद भी किसान पालनहार होते हुए भी उसे किन समस्याओ से जुझना पडता है| यह पाठक को मुख्य रूप से दर्शाना|

शोध का महत्त्व :-

भूमंडलीकरण के दौड में मनुष्य विकासप्रिय बनता जा रहा है| हर क्षेत्र में मनुष्य का विकास होता जा रहा , वह सफल होता जा रहा है,किन्तु अकेला किसान ही है जो आज भी ढेर सारी समस्याओ का सामना कर रहा है| अत: शोध से पाठक तथा समीक्षको का ध्यान खिचते हुए किसान के उज्ज्वल भविष्य के लिये हर प्रयास एवं सुधार की अपेक्षा है|

किसान की समस्याए :-

किसान हमेशा से अभावग्रस्त और समस्याओ से जुझता रहा है| मनुष्य के अस्तित्व का आधार कृषि है लेकिन आज की स्थिती में किसान ही निराधार है| जो किसान सबके लिये अनाज उगा रहा है, वह खुद भूखे मरने के लिये विवश है| किसान अपने कर्तव्य के प्रति इमानदार रहा है लेकिन आज भी उसके बारे में कोई इमानदारी से पेश नही आता| राजनेता,साहुकार,व्यापारी,

प्रशासनिक अधिकारी सभी धोखा ही देते आए है| कभी भी किसानो की समस्याओ को समाप्त करने का कोई नही सोचता है| हमारे यहा के लोगो का वर्णन कवि नागार्जुन जी ने अपनी कविता में निम्नप्रकार से किया है-

"भुखमरो के कंकालो पर रंग-बिरंगी साज सजे|
जमीदार है, साहुकार है. बनिया है. व्यापारी है
अन्दर-अन्दर बिकट कसाई. बाहर,खददरधारी है|"

आज भी किसान को ढेर सारी समस्याओ का सामना करना पडता है| जिसमे से कुछ निम्नप्रकार से है-

1. **प्राकृतिक आपदाए -**
   आज भी हमारे देश का किसान सुखी नही है| उसे हर प्रकार की समस्या से जुझना पडता है, उसमे से एक है प्राकृतिक आपदा| कभी वो भयानक अकाल से मारा जाता है तो कभी प्रलयकारी बाढ से| इन प्राकृतिक आपदाओ के कारण उसका बहुत बडा नुकसान होता है, जिससे वह कर्ज के बोझ के तले दब जाता है|
2. **कर्ज का बोझ :-**
   किसान की समस्याओ में सबसे मुख्य समस्या है 'कर्ज का बोझ|' प्राकृतिक आपदा, किसानो की फसलो के उचित मूल्य न मिलना, कृषि विषयक शासन की नई नीतिया आदि के कारण किसान का नुकसान होता है और उसके उपर कर्ज का बोझ बढता जाता है| इस कारण कर्ज का बोझ कम न होने से वह मजबूरन आत्महत्या करने जैसा कदम उठता है|
3. **कृषि भूमी का नुकसान :-**
   आधुनिक समयमें कृषि के सामने बडी समस्या है, कटाव और मानव निर्मित कारको के कारण कृषि भूमी का नुकसान| कटाव के कारण उपजाऊ मिट्टी में खनिज की समृद्धी कम होती जाती है और भविष्य में वहा लगाई जाने वाली फसलो का नुकसान होता है|
   साथ ही औद्योगिक कारखानो से निकले विभिन्न रसायन एवं प्रदुषको से उपजाऊ भूमी एवं उपज का नुकसान होता है|
4. **फसलो की घटती किस्मे :-**
   कृषि क्षेत्र में एक और बडी समस्या दिखाई देती है,फसलो में विविधता की कमी| कृषि की शुरुवात में किसान अपने खेतो में कई प्रकार की फसले उगाते थे लेकिन औद्योगिक कृषि विकास के बाद से विभिन्न प्रकार की फसलों की संख्या में कमी आई है|
   ऐसा अनुमान है कि ५०,००० से ज्यादा पौधो की प्रजातीया है, जिन्हे मनुष्य सुरक्षित रूप से खा सकता है|लेकिन दिलचस्प बात यह है की ओसत मानव आहार का लगभग ९०% हिस्सा सिर्फ १५ अलग-अलग पौधो की प्रजातियो से बना होता है| दुनिया भर में तीन सबसे ज्यादा उत्पादित फसले मक्का,सोया और गेहू है| याने फसलो की घटती किस्मे आज के समय में एक बडी समस्या बन चुकी है|

5. **कम होती कृषि की मात्रा:-**

   आज के समय में कृषि के लिये उपलब्ध भूमि की कम होती मात्रा एक बहुत बडी समस्या बन गई है| देश की बढती आबादी के कारण पहले से ही बडी समस्या है| साथ ही औद्योगिक विकास के चलते राजमार्गो का ,कारखानो जैसा ही प्रभाव कृषि क्षेत्र पर होता है| कृषि के लिये उपलब्ध भूमि पर विशाल सडके बनाकर उपजाऊ भूमि को कम कर रहे है|

6. **खेती और लोगो का स्वास्थ्य :-**

   कृषि से जुडे औद्योगिक संरचनाओ में उत्पादो के निमार्ण को सुविधा जनक बनाया जाता है| जिससे लगातार विभिन्न रूपो में प्रदूषण होता है| किसानो की फसले इन प्रदुषको से प्रभावित होती है एवं उनकी वृद्धी रुक जाती है| इन फसलो के खाने से मनुष्य को स्वास्थ्य संबंधी समस्याए हो सकती है|

   साथ ही आज हम कृषि की मात्रा में ज्यादातर उत्पाद लेने हेतु किसान विभिन्न कारको का इस्तेमाल कर रहे है जो मनुष्य जीवन के लिये हानिकारक साबित होते है|

7. **किसान और अर्थव्यवस्था :-**

   कृषि वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और समाज के लिये इसके महत्व पूर्ण लाभ है | किसी देश में मजबूत कृषि क्षेत्र उस राज्य में स्वास्थ्य और जीवन स्तर के उच्च स्तर को जन्म दे सकते है| आधुनिक दुनिया में जिससे देश कि अर्थव्यवस्था संपन्न होती है|

8. **खेती के प्रति कम होती आस्था:-**

   आज के समय में भूमंडलीकरण के कारण लोग पैसे के पीछे भाग रहे है, जिससे लोगों में खेती के प्रति आस्था कम होती जा रही है| जिनके पास खेती तो बहूत है पर उसे करने के लिये मनुष्यो की कमी है उसे मजदुरो के सहारे निर्भर रहना पडता है |मजदूर किसी मांग के कारण आंदोलन करे तो खेती की छोडीए ,पशुओ की देखभाल करना भी मुश्कील होता है|

हिंदी साहित्य में किसान विमर्श :-

किसान विमर्श पर शोध और चर्चाओ की जरुरत है| किसान से जुडी कुछ रचनाओ में निम्नलिखित वर्णन मिलता है-

प्रेमचंद जी की रंगभूमी,कर्मभूमी,गोदान आदि उपन्यासो में किसानो का यथार्थवादी चित्रण किया है|साथ ही फणीश्वरनाथ रेणू का 'मैला आंचल' संजीव का 'फांस' पंकज सुबीर का 'अकाल में उत्सव' कर्मेदू शिशिर का 'बहुत लंबी राह' मिथिलेश्वर का 'तेरा संगी कोई नही' आदि उपन्यासो में तथा बहुत से कवियो ने भी किसानो की त्रासदी का वास्तववादी चित्रण किया है|

साथ ही आज की नई पीढी खेती करने के बजाय उसे नौकरी के पैसो से तौलते है | काशीनाथ सिंह का 'रेहन पर रग्घू' में लेखक कहते है कि "रघुनाथ के पास गाव की जमीन के सिवा कुछ नही था और उस जमीन को वे अनमोल समझते थे बेटे उसे 'कैश' में भुना कर देखते थे और कह रहे थे कि इससे ज्यादा मेरी एक महिने की इनकम है|" ---------३ पृष्ठ १४९

केदारनाथ अग्रवाल जी की यह पंक्तीया किसान के किये गये शोषण का एक वास्तविक चित्र खिचती है|

“जब बाप मरा तब क्या पाया भूखे किसान के बेटे ने
घर का मलवा टूटी खटीया वह भी परती
कंचन सुमेरू का प्रतियोगी व्दारे का पर्वत घुरे का
बनिये का रुपये का कर्जा जो नही चुकाने पर चुकता| ”

निष्कर्ष :-

आज के जमाने में किसान आधुनिकता ग्रहण कर रहा है, फिर भी उसका वास्तविक विकास अंधेरे में है| अत: साहित्य के समिक्षको का उत्तरदायित्व बनता है की किसान जीवन नवीन पृष्टभूमि पर रख परखा जाये,उसे लोगों के बीच रखा जाये तभी किसानो की वास्तविकता लोगों के सामने आयेगी|

संदर्भ:-

१) 'सच न बोलना' कविता- कवि नागार्जुन
२)'पैतृक संपत्ती' कविता - कवि केदारनाथ अग्रवाल
३) 'रेहन पर रग्घू ' २००७ - काशीनाथ सिंह - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली- पृ. १४९
४) 'गोदान' - प्रेमचंद १९३६ में प्रकाशित - हिंदी ग्रंथ रत्नाकर
५) 'मैला आंचल' - फणीश्वरनाथ रेणू १९५४ राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली